खानदानी झगड़ों
के असबाब और उनका हल
1
जस्टिस मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद तक़ी साहिब उस्मानी
Maktabe Ashraf

1

ख़ानदानी झगड़ों

के असबाब और उनका हल

(पहला हिस्सा)

ख़िताब

जस्टिस मौलाना मुफ़्ती
मुहम्मद तक़ी साहिब उस्मानी

अनुवादक

मु० इमरान क़ासमी एम०ए० (अलीग)

प्रकाशक

फ़रीद बुक डिपो प्रा० लि०

422, मटिया महल, ऊर्दू मार्किट, जामा मस्जिद देहली 6

फ़ोन आफ़िस 3289786,3289159 आवास 3262486

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

नाम किताब — ख़ानदानी झगड़ों के असबाब और उनका हल (पहला हिस्सा)

ख़िताब — मौलाना मु० तक़ी उस्मानी

अनुवादक — मुहम्मद इमरान क़ासमी

संयोजक — मुहम्मद नासिर ख़ान

तायदाद — 1100

प्रकाशन वर्ष — जून 2002

कम्पोज़िंग — इमरान कम्प्यूटर्स
मुज़फ़्फ़र नगर (0131-442408)

>>>>>>>>>>>>

प्रकाशक

फ़रीद बुक डिपो प्रा० लि०

422, मटिया महल, ऊर्दू मार्किट, जामा मस्जिद देहली 6
फ़ोन आफ़िस 3289786,3289159 आवास 3262486

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

ख़ानदानी झगड़ों के असबाब

और उनका हल

(पहला हिस्सा)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَاوَسَنَدَنَاوَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَ اَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا، اَمَّا بَعْدُ:

عن أبى الدرداء رضى الله تعالىٰ عنه عن النبى صلى الله عليه وسلم قال: آلا أخبركم بافضل من درجة الصيام والصلوٰة والصدقة قالوا: بلٰى قال: اصلاح ذات البين، وفساد ذات البين الحالقة۔ (ابوداؤد شريف)

उम्मते मुहम्मदिया के दानिश्वर

यह हदीस हज़रत अबू दर्दा रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत की गयी है। हज़रत अबू दर्दा रज़ियल्लाहु अ़न्हु सहाबा–ए–किराम में बड़े ऊंचे दर्जे के औलिया अल्लाह में से हैं, और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उनको "हकीमु हाज़िहिल उम्मत" का लक़ब अ़ता फ़रमाया

था, यानी यह उम्मते मुहम्मदिया सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के हकीम और फ़लॉस्फ़र हैं। अल्लाह तआ़ला ने उनको "हिक्मत" अ़ता फ़रमाई थी।

सवाल के ज़रिए तलब पैदा करना

वह रिवायत करते हैं कि एक बार हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सहाबा–ए–किराम से पूछा: क्या मैं तुम्हें ऐसा दर्जा न बताऊं जो नमाज़, रोज़े और सदक़े से भी अफ़ज़ल है? यह हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की गुफ़्तगू का अन्दाज़ था कि जब किसी चीज़ की अहमियत बयान करनी मन्ज़ूर होती तो सहाबा–ए–किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम से ख़ुद ही सवाल फ़रमाया करते थे, ताकि उनके दिल में तलब पैदा हो जाए। अगर दिल में तलब हो तो उस वक़्त जो बात कही जाए उसका असर भी होता है, और अगर दिल में तलब न हो तो कैसी भी अच्छी से अच्छी बात कह दी जाए, कैसा ही अच्छे से अच्छा नुस्ख़ा बता दिया जाए, बेहतर से बेहतर तालीम दे दी जाए, उन चीज़ों से कोई फ़ायदा नहीं होता। यह तलब बड़ी चीज़ है।

दीन की तलब पैदा करें

इसलिए बुज़ुर्गाने दीन ने फ़रमाया कि इन्सान की कामयाबी का राज़ इसमें है कि इन्सान अपने अन्दर दीन की तलब और दीन की बातों पर अ़मल करने की तलब पैदा कर ले। जब यह तलब पैदा हो जाती है तो फिर

अल्लाह तआ़ला ख़ुद नवाज़ देते हैं। अल्लाह तआ़ला की आ़दत और तरीक़ा यही है। इसी को मौलाना रूमी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं:

आब कम जो तिश्नगी आवर ब-दस्त
ता बजोशद आब अज़ बाला व पस्त

यानी पानी कम तलाश करो, प्यास ज़्यादा पैदा करो, जब प्यास पैदा हो जाती है तो अल्लाह तआ़ला की आ़दत व तरीक़ा यह है कि फिर ऊपर और नीचे हर तरफ़ पानी जोश मारता है। यह तलब बड़ी चीज़ है। अल्लाह तआ़ला अपने फ़ज़्ल से हम सब के दिलों में पैदा फ़रमा दे, आमीन।

"तलब" बेचैनी पैदा करती है

यह "तलब" ही वह चीज़ है कि जब एक बार इन्सान के अन्दर पैदा हो जाए तो फिर इन्सान को चैन लेने नहीं देती, बल्कि उसको बेताब रखती है। जब तक इन्सान को मक़सूद ह़ासिल न हो जाए इन्सान को चैन नहीं आता। इसकी मिसाल यों समझिए कि जब इन्सान को भूख लग जाए और "भूख" के मायने हैं "खाने की तलब" तो जब इन्सान को भूख लगी हुई होगी तो क्या इन्सान को चैन आयेगा? किसी दूसरे काम को करने का दिल चाहेगा? जब खाने की तलब लगी हुई है तो आदमी को उस वक़्त चैन नहीं आयेगा, जब तक कि उसको खाना न मिल जाए। अगर इन्सान को प्यास लगी हुई है तो "प्यास" के मायने हैं "पानी की तलब" जब तक पानी नहीं मिल जायेगा उस वक़्त तक चैन नहीं आयेगा।

अल्लाह तआला हमारे दिलों में "दीन" की भी ऐसी तलब पैदा फ़रमा दे, जब यह तलब पैदा हो जाती है तो इन्सान को उस वक़्त तक चैन नहीं आता जब तक दीन हासिल न हो जाए बल्कि बेचैनी लगी रहती है।

सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम और दीन की तलब

हज़राते सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम का यही हाल था कि उनमें से हर शख़्स को यह बेचैनी लगी हुई थी कि मरने के बाद मेरा क्या अन्जाम होना है? अल्लाह तआला के सामने पेश होना है, उसके बाद या तो जहन्नम है या जन्नत है, लेकिन मुझे नहीं मालूम कि मेरा अन्जाम क्या होने वाला है। उस बेचैनी का नतीजा यह था कि सुबह से लेकर शाम तक मामूली मामूली कामों में भी फ़िक्र लगी हुई है कि मालूम नहीं कि यह काम अल्लाह तआला की रज़ामन्दी के मुताबिक़ है या नहीं? कहीं इसकी वजह से मैं जहन्नम का हक़दार तो नहीं हो गया।

हज़रत हन्ज़ला रज़ियल्लाहु अ़न्हु को आख़िरत की फ़िक्र

यहां तक कि हज़रत हन्ज़ला रज़ियल्लाहु अ़न्हु हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में आए और आकर अ़र्ज़ किया कि "या रसूलल्लाह! नाफ़-क़ हन्ज़-लतु" हन्ज़ला तो मुनाफ़ि हो गया। अपने बारे में कह रहे हैं कि मैं तो मुनाफ़िक़ हो गया। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उनसे पूछा कि कैसे

मुनाफ़िक़ हो गए? उन्होंने फ़रमाया कि जब मैं आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की मज्लिस में बैठता हूं तो उस वक़्त आख़िरत की फ़िक्र लगी होती है और ऐसा मालूम होता है कि जन्नत और जहन्नम को अपनी आंखों से अपने सामने देख रहे हैं, और उसकी वजह से दिल में रिक़्क़त और नरमी पैदा होती है और अल्लाह तआ़ला की इताअ़त का जज़्बा पैदा होता है। लेकिन जब आपकी मज्लिस से उठकर बीवी बच्चों के पास घर जाते हैं तो उस वक़्त दिल की यह कैफ़ियत बाक़ी नहीं रहती। ऐसा मालूम होता है कि मैं तो मुनाफ़िक़ हो गया, इसलिए कि आपके एक हालत होती है और घर जाकर दूसरी हालत हो जाती है।

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उनको इत्मीनान दिलाया और फ़रमाया कि ऐ हन्ज़ला! यह वक़्त वक़्त की बात होती है, किसी वक़्त इन्सान पर एक हाल का ग़ल्बा हो जाता है और दूसरे वक़्त दूसरी हालत का ग़ल्बा हो जाता है, इसलिए परेशान न हों, बल्कि जो काम अल्लाह तआ़ला ने बताए हैं उनमें लगे रहो, इन्शा अल्लाह बेड़ा पार हो जायेगा। इसलिए यह फ़िक्र कि मैं कहीं मुनाफ़िक़ तो नहीं हो गया, यह आख़िरत की तलब है जो बेचैन कर रही है।

हज़रत फ़ारूक़े आज़म और आख़िरत की फ़िक्र

हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अ़न्हु इतने बड़े रुतबे वाले सहाबी, दूसरे ख़लीफ़ा जिनके बारे में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह फ़रमा दिया कि

अगर मेरे बाद कोई नबी होता तो उमर होते, और जिनके बारे में आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जिस रास्ते से उमर (रज़ियल्लाहु अ़न्हु) गुज़र जाते हैं, उस रास्ते से शैतान नहीं गुज़रता, शैतान रास्ता बदल देता है। वह उमर जिनके बारे में आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मैंने जन्नत के अन्दर तुम्हारा महल देखा है, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से ये तमाम बातें सुनने के बावजूद आपका यह हाल था कि आप हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु को क़सम देकर पूछते हैं कि ऐ हुज़ैफ़ा! ख़ुदा के लिए यह बताओ कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मुनाफ़िक़ों की जो फ़ेहरिस्त तुम्हें बताई है, उसमें कहीं मेरा नाम तो नहीं है? यह फ़िक्र और तलब लगी हुई है।

तलब के बाद मदद आती है

और जब तलब लग जाती है तो फिर अल्लाह तआ़ला अपनी रहमत से अ़ता फ़रमा ही देते हैं। इसलिए मौलाना रूमी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं:

आब कम जो तिश्नगी आवर ब-दस्त
ता बजोशद आब अज़ बाला व पस्त

"पानी तलाश करने से ज़्यादा प्यास पैदा करो" दिल में हर वक़्त खटक और बेचैनी और बेताबी लगी हुई हो कि मुझे सही बात का इल्म हो जाए, और जब यह तलब पैदा हो जाती है तो अल्लाह तआ़ला अपने फ़ज़्ल से अ़ता फ़रमा ही देते हैं। उनका तरीक़ा यह है कि किसी सच्चे तालिब

को जिसके दिल में सच्ची तलब हो आज तक अल्लाह तआ़ला ने रद्द नहीं फ़रमाया। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तरबियत का यह अन्दाज़ था कि आप सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम में पहले तलब पैदा फ़रमाते थे। इसलिए पहले आपने उनसे सवाल किया कि क्या मैं तुम्हें अल्लाह तआ़ला की रज़ामन्दी का और अज्र व सवाब का ऐसा दर्जा न बताऊं जो नमाज़ से भी अफ़ज़ल, रोज़ों से भी अफ़ज़ल और सदक़े से भी अफ़ज़ल हो? यह सवाल करके उनके अन्दर शौक़ और तलब पैदा फ़रमा रहे हैं।

नमाज़ के ज़रिए अल्लाह की नज़्दीकी

सहाबा—ए—किराम ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम! ज़रूर बताइए, इसलिए कि सहाबा—ए—किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम को तो हर वक़्त यह धुन लगी हुई होती थी कि कौन सी चीज़ ऐसी है जो अल्लाह तआ़ला की नज़्दीकी अ़ता करने वाली है, और अल्लाह तआ़ला की रिज़ा अ़ता करने वाली है। और अब तक रोज़े की नमाज़ की और सदक़े की फ़ज़ीलत सुन चुके थे कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि नमाज़ दीन का सतून है। एक और हदीस में आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया कि बन्दा नवाफ़िल के ज़रिए मेरा क़ुर्ब यानी निकटता हासिल करता रहता है, और जितने नवाफ़िल ज़्यादा पढ़ता है वह उतना ही मेरे क़रीब हो जाता है, यहां तक कि एक दर्जा ऐसा आ जाता है कि मैं उसकी

आंख बन जाता हूं जिस से वह देखता है, मैं उसका कान बन जाता हूं जिस से वह सुनता है, मैं उसका हाथ बन जाता हूं जिस से वह पकड़ता है, गोया कि नवाफ़िल की कसरत के नतीजे में वह इन्सान अल्लाह तआ़ला के इतना क़रीब हो जाता है कि उस इन्सान का पूरा का पूरा वजूद अल्लाह तआ़ला की रिज़ा का प्रतीक बन जाता है। सहाबा—ए—किराम नमाज़ की यह फ़ज़ीलत सुन चुके थे, इसलिए उनके ज़ेहनों में यह था कि नमाज़ से ज़्यादा अफ़ज़ल क्या चीज़ होगी।

रोज़े की फ़ज़ीलत

रोज़े की यह फ़ज़ीलत भी सहाबा—ए—किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम सुन चुके थे कि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि दूसरी इबादतों का अज्र तो मैंने मुक़र्रर कर दिया है कि फ़लां इबादत का सवाब दस गुना, फ़लां इबादत का सवाब सौ गुना और फ़लां इबादत का सवाब सात सौ गुना, लेकिन रोज़े के बारे में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया किः

"الصوم لی وانا اجزی بہ" (نسائی شریف)

यह रोज़ा मेरे लिए है और मैं ही उसकी जज़ा दूंगा। यानी रोज़े का जो अज्र व सवाब मैं अ़ता करने वाला हूं वह तुम्हारी गिनती में और तुम्हारे पैमानों में उस अज्र व सवाब का तसव्वुर आ ही नहीं सकता। यह रोज़ा चूंकि मेरे लिए है, इसलिए इसका अज्र व सवाब भी अपनी शान के मुताबिक़ दूंगा, अपनी बड़ाई के मुताबिक़ दूंगा। सहाबा—ए—

किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम रोज़े की यह फ़ज़ीलत सुन चुके थे। इसलिए उनके ज़ेहनों में यह था कि रोज़ा बहुत ज़्यादा अफ़ज़ल इबादत है।

सदक़े की फ़ज़ीलत

सहाबा–ए–किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम सदक़े की यह फ़ज़ीलत सुन चुके थे कि अल्लाह के रास्ते में सदक़ा करने से सात सौ गुना अज्र व सवाब मिलना तो यक़ीनी है और यह सात सौ गुना सवाब भी हमारे हिसाब से नहीं बल्कि जन्नत के हिसाब से मिलना है। इसलिए सहाबा–ए–किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम यह समझते थे कि सदक़ा करना बहुत अफ़ज़ल इबादत है।

सब से अफ़ज़ल अ़मल झगड़े ख़त्म कराना

इसलिए हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उनसे फ़रमाया कि क्या मैं ऐसी चीज़ न बताऊं जो इस नमाज़ से भी अफ़ज़ल है, इस रोज़े से भी अफ़ज़ल है, इस सदक़ा करने से भी अफ़ज़ल है जिनकी फ़ज़ीलतें तुमने सुन रखी हैं? चुनांचे यह सुनकर सहाबा–ए–किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के दिल में शौक़ पैदा हुआ और उन्होंने अ़र्ज़ किया: या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम! वह चीज़ ज़रूर बताएं ताकि हम वह चीज़ हासिल करें और उसके नतीजे में अल्लाह तआ़ला हमें इन इबादतों से भी ज़्यादा सवाब अ़ता फ़रमा दें। उसके बाद आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि वह चीज़ है:

"اصلاح ذات البين"

यानी अगर दो मुसलमानों के दरमियान नाचाक़ी, इख़्तिलाफ़ और कटाव हो गया है, या दो मुसलमानों के दरमियान झगड़ा खड़ा हो गया है और दोनों एक दूसरे की सूरत देखने के रवादार नहीं हैं तो अब कोई ऐसा काम करो जिसके नतीजे में उनके दरमियान वह झगड़ा ख़त्म हो जाए और दोनों के दिल आपस में मिल जाएं और दोनों एक हो जाएं। तुम्हारा यह अ़मल नमाज़ से भी अफ़ज़ल है, रोज़े से भी अफ़ज़ल है, सदक़े से भी अफ़ज़ल है। नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का यह अन्दाज़े बयान था।

सुलह कराना नफ़िल नमाज़ रोज़े से अफ़ज़ल है

लेकिन एक बात याद रखें कि इस हदीस में नमाज़ रोज़े से नफ़्ली नमाज़ रोज़े मुराद हैं। मतलब यह है कि अगर एक तरफ़ तुम सारी रात नफ़्ली नमाज़ें पढ़ते रहे, सारा दिन नफ़्ली रोज़ा रखो और बहुत सा माल नफ़्ली सदक़ा करो, तो इनमें से हर काम बड़ी फ़ज़ीलत और सवाब का है, लेकिन दूसरी तरफ़ दो मुसलमान भाईयों के दरमियान झगड़ा है, और उस झगड़े की वजह से दोनों के दरमियान नाचाक़ी पैदा हो गई है, तो उस झगड़े को ख़त्म करने के लिए अगर तुम थोड़ा सा वक़्त ख़र्च करोगे और उनके दिल और गले मिलवा दोगे और उनके दरमियान मुहब्बत पैदा करा दोगे तो उस सूरत में तुमने जो सारी रात नफ़िल नमाज़ें पढ़ी थीं, नफ़िल रोज़े रखे थे और सैंकड़ों

रुपये नफ़िल सदक़े के तौर पर दिए थे, उन सब से ज़्यादा अज्र व सवाब तुम्हें इस अमल में हासिल हो जायेगा। आप अन्दाज़ा करें कि कितनी बड़ी बात हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने बयान फ़रमा दी।

आपस के झगड़े दीन को मूंडने वाले हैं

एक तरफ़ तो यह फ़रमा दिया कि मुसलमनों के दरमियान आपस में मुहब्बतें, भाई चारा और प्यार व मुहब्बत क़ायम करना तमाम नफ़्ली इबादतों से अफ़ज़ल है, और दूसरी तरफ़ अगला जुम्ला इसके बिल्कुल उलट इर्शाद फ़रमा दिया किः

"وفسادذات البين هى الحالقة"

यानी आपस के झगड़े, आपस की नफ़रतें और नाचाक़ियां ये मूंडने वाली चीज़ें हैं। एक दूसरी हदीस में इसकी तश्रीह करते हुए आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मैं यह नहीं कहता कि आपस के ये झगड़े तुम्हारे बालों को मूंडने वाले हैं, बल्कि ये झगड़े तुम्हारे दीन को मूंडने वाले हैं। क्योंकि जब आपस में नफ़रतें होती हैं और झगड़े होते हैं तो उस झगड़े की वजह से इन्सान न जाने कितने बेशुमार गुनाहों के अन्दर मुब्तला हो जाता है, इन झगड़ों के नतीजे में एक दूसरे की ग़ीबत होती है, एक दूसरे पर बोहतान लगाया जाता है, एक दूसरे को तक्लीफ़ पहुंचाई जाती है, एक दूसरे पर तोहमतें लगाई जाती हैं। तो ये झगड़े बेशुमार गुनाहों का मजमूआ होता है।

झगड़ों की नहूसत

इन झगड़ों की नहूसत यह होती है कि इन्सान दीन से बेगाना हो जाता है और दीन का नूर जाता रहता है, और दिल में अंधेरा पैदा हो जाता है। इसी वजह से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जगह जगह यह ताकीद फ़रमाई कि आपस के झगड़ों से बचो।

मेल-मिलाप के लिए आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का जमाअ़त छोड़ देना

देखिए! हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पूरी मुबारक ज़िन्दगी में मस्जिदे नबवी में इमामत के फ़राइज़ अन्जाम देते रहे। ज़ाहिर है कि आपकी मौजूदगी में कौन नमाज़ पढ़ायेगा, और आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से ज़्यादा कौन नमाज़ बा जमाअ़त की पाबन्दी करेगा, लेकिन पूरी मुबारक ज़िन्दगी में सिर्फ़ एक बार आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम नमाज़ के वक़्त मस्जिदे नबवी में तशरीफ़ नहीं ला सके, यहां तक कि हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने नमाज़ पढ़ाई। और नमाज़ के वक़्त हाज़िर न होने की वजह यह हुई थी कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को पता चला कि फ़लां क़बीले में मुसलमानों के दो गिरोहों के दरमियान झगड़ा हो गया है, चुनांचे उनके झगड़े को ख़त्म कराने के लिए और उनके दरमियान सुलह कराने के लिए हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम उस क़बीले में तशरीफ़ ले गए, उस सुलह

और मेल–मिलाप कराने में देर लग गई, यहां तक कि नमाज़ का वक़्त आ गया। सहाबा–ए–किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने जब देखा कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मौजूद नहीं हैं, तो उस वक़्त हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने इमामत फ़रमाई और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम बाद में तशरीफ़ लाए।

पूरी मुबारक ज़िन्दगी में सिर्फ़ यह एक वाक़िआ है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सेहत की हालत में नमाज़ के वक़्त मस्जिदे नबवी में तशरीफ़ न ला सके, इसकी वजह सिर्फ़ यह थी कि आप लोगों के दरमियान सुलह कराने और झगड़ा ख़त्म कराने के लिए तशरीफ़ ले गए थे। इसलिए क़ुरआने व हदीस इन इर्शादात से भरे हुए हैं कि ख़ुदा के लिए मुसलमानों के दरमियान झगड़ों को किसी क़ीमत पर बर्दाश्त न करो। जहां कहीं झगड़े का कोई सबब पैदा हो, फ़ौरन उसको ख़त्म कराने की कोशिश करो, इसलिए कि ये झगड़े दीन को मूंड देने वाले हैं।

जन्नत के बीच में मकान दिलाने की ज़मानत

एक हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया:

"أنا زعيم ببيت فى وسط الجنة لمن ترك المراء وهو محقّ"

मैं उस शख़्स के लिए जन्नत के बीचों बीच घर दिलवाने की ज़मानत लेता हूं जो शख़्स हक़ पर होने के बावजूद झगड़ा छोड़ दे। यानी वह शख़्स हक़ पर था और

हक़ पर होने की वजह से अगर वह चाहता तो अपने हक़ को वुसूल करने के लिए मुक़द्दमा दायर कर देता, या कोई और ऐसा तरीक़ा इख़्तियार कर लेता जिसके नतीजे में उसको उसका हक़ मिल जाता, लेकिन उसने यह सोच कर कि झगड़ा बढ़ेगा और झगड़ा बढ़ाने से क्या फ़ायदा, इसलिए अपना हक़ ही छोड़ दिया। ऐसे शख़्स के लिए आपने फ़रमाया कि मैं उसको जन्नत के बीचों बीच घर दिलवाने का ज़िम्मेदार हूं। इतनी बड़ी बात सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमा दी, यह कोई मामूली बात नहीं है।

यह ज़मानत दूसरे आमाल पर नहीं

यह ज़िम्मेदारी हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने किसी दूसरे अ़मल पर नहीं ली, लेकिन हक़ पर होने के बावजूद झगड़ा छोड़ने वाले के लिए यह ज़िम्मेदारी ले रहे हैं। इसके ज़रिए हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम यह तालीम दे रहे हैं कि आपस के झगड़े ख़त्म कर दो, अल्लाह के बन्दे बन जाओ और आपस में भाई भाई बन जाओ। और झगड़े के जो जो असबाब हो सकते हैं उनको भी ख़त्म करो, इसलिए कि अल्लाह तआ़ला ने इत्तिफ़ाक़ में, भाईचारे में और मुहब्बत में एक नूर रखा है, उस नूर के ज़रिए इन्सान की दुनिया भी रोशन होती है और आख़िरत भी रोशन होती है। और अगर आपस में झगड़े हों, फ़साद हों तो यह अंधेरा है, दुनिया में भी अंधेरा और आख़िरत में भी अंधेरा, जो इन्सान के दीन को मूंड कर रख देता है।

क़ातिल और मक़्तूल दोनों जहन्नम में

एक हदीस में जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

"إذا التقى المسلمان بسيفهمافالقاتل والمقتول كلهما فى النار"

यानी अगर दो मुसलमान तलवार के ज़रिए एक दूसरे का मुक़ाबला करने खड़े हो जाएं और आपस में लड़ाई करना शुरू कर दें तो अगर उनमें से एक दूसरे को क़त्ल कर देगा तो क़ातिल और मक़्तूल दोनों जहन्नम में जायेंगे। सहाबा–ए–किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने सवाल कियाः या रसूलल्लाह! क़ातिल तो जहन्नम में जायेगा क्योंकि उसने एक मुसलमान को नाहक़ क़त्ल किया, लेकिन मक़्तूल जहन्नम में क्यों जायेगा? हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जवाब में फ़रमायाः

"إنه كان حريصًا على قتل صاحبه"

क्योंकि यह मक़्तूल (यानी क़त्ल होने वाल शख़्स) भी अपने सामने वाले को मारने के इरादे से चला था, इसी लिए तलवार उठाई थी कि अगर मेरा दाव चल गया तो मैं मार दूंगा, लेकिन इत्तिफ़ाक़ से दाव उसका नहीं चला बल्कि दूसरे का दाव चल गया, इसलिए यह मक़्तूल बन गया और वह क़ातिल बन गया, इस वजह से यह भी जहन्नम में वह भी जहन्नम भी। इसलिए फ़रमाया कि किसी मुसलमान के साथ लड़ाई का मामला हरगिज़ न करो।

हब्शी गुलाम हाकिम की इत्तिबा करो

एक और हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व

सल्लम ने फ़रमाया कि अगर कोई हब्शी ग़ुलाम भी तुम पर हाकिम बनकर आ जाए तो उसके ख़िलाफ़ भी तलवार मत उठाओ, जब तक वह खुलेआम कुफ़्र का इर्तिकाब न करे। क्योंकि अगर तुम उसके ख़िलाफ़ तलवार उठाओगे तो कोई तुम्हारा साथ देगा और कोई दूसरे का साथ देगा, उसके नतीजे में मुसलमान दो गिरोहों में बंट जाएंगे और उनके दरमियान दुश्मनी व नफ़रत पैदा हो जाएगी और मुसलमानों के बीच फूट और बिखराव और ना इत्तिफ़ाक़ी को हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने किसी क़ीमत पर भी बर्दाश्त नहीं फ़रमाया, आपने फ़रमा दिया कि:

"كونوا عباد الله اخوانًا"

ऐ अल्लाह के बन्दो! आपस में भाई भाई बन जाओ।

आज ज़िन्दगी जहन्नम बनी हुई है

जब हमारे ज़ेहनों में इबादत का ख़्याल आता है तो नमाज़ रोज़े का तो ख़्याल आता है, सदक़े का ख़्याल आता है, ज़िक्र और तस्बीह का ख़्याल आता है, कुरआने करीम के पढ़ने का ख़्याल आता है, और अल्हम्दु लिल्लाह ये सब भी ऊंचे दर्जे की इबादतें हैं, लेकिन सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमा रहे हैं कि इनसे भी ऊंचे दर्जे की चीज़ मुसलमानों के दरमियान आपस में सुलह कराना है। और आज हमारा समाज हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के इस इर्शाद से इतना दूर चला गया है कि क़दम क़दम पर आपसी दुश्मनी है, झगड़े और लड़ाईयां हैं, ना इत्तिफ़ाक़ियां हैं, और इसकी वजह से

ज़िन्दगी जहन्नम बनी हुई है। हालांकि आपने यह फ़रमा दिया कि यह चीज़ दीन को मूंडने वाली है, इसने आज हमारे दीन को मूंड डाला है, जिसकी वजह से इसकी बुराई और ख़राबी हमारे दिलों में बैठी हुई नहीं है।

लोगों के दरमियान इख़्तिलाफ़ डालने वाले काम करना

अगर हमारे समाज में कोई बेनमाज़ी है या कोई शराब पीता है या किसी और गुनाह में मुब्तला है, तो उसको तो हमारे समाज में अल्हम्दु लिल्लाह यह समझा जाता है कि यह शख़्स बुरा काम कर रहा है, लेकिन अगर कोई शख़्स ऐसा काम कर रहा है जिसकी वजह से लोगों के दरमियान लड़ाईयां हो रही हैं, जिसकी वजह से मुसलमानों के दरमियान झगड़े हो रहे हैं, तो उसकी तरफ़ से किसी के दिल में यह ख़्याल नहीं आता कि यह इतना बड़ा मुज्रिम है जितना सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसको मुज्रिम क़रार दे रहे हैं। और इस बात की फ़िक्र भी किसी के दिल में नहीं है कि इन झगड़ों को कैसे ख़त्म किया जाए? इसलिए यह बहुत बड़ा बाब (अध्याय) है जो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खोला और आपस में सुलह कराने को नमाज़ रोज़े और सदक़े से भी अफ़ज़ल क़रार दिया।

ऐसा शख़्स झूठा नहीं

यहां तक कि एक हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु

अ़लैहि व सल्लम ने यह फ़रमा दिया कि:

"ليس الكذاب الذی ينمی خيرًا"

यानी जो शख़्स एक मुसलमान भाई के दिल में दूसरे की मुहब्बत पैदा करने के लिए और नफ़रत दूर करने के लिए कोई ऐसी बात कह दे जो बज़ाहिर हक़ीक़त के ख़िलाफ़ हो, तो वह झूठ बोलने वालों में शुमार नहीं होगा। जैसे एक शख़्स को मालूम हुआ कि फ़लां दो मुसलमान भाईयों के दरमियान झगड़ा है और दोनों एक दूसरे से नफ़रत करते हैं। यह शख़्स चाहता है कि दोनों के दरमियान मुहब्बत हो जाए। अब अगर यह शख़्स जाकर उनमें से किसी से ऐसी बात कह दे जो बज़ाहिर हक़ीक़त के ख़िलाफ़ है, जैसे यह कह दे कि आप तो फ़लां से इतनी नफ़रत करते हैं लेकिन वह तो आप से बहुत मुहब्बत करता है। वह तो आपके हक़ में दुअ़ा करता है, मैंने उसको आपके हक़ में दुआ़ करते देखा है।

अब अगरचे उसका नाम लेकर दुअ़ा करते हुए नहीं देखा था, लेकिन दिल में यह नियत कर ली कि वह यह दुअ़ा तो करता ही होगा कि:

"ربنا اٰتنا فی الدنيا حسنةً وفی الاٰخرة حسنة وقنا عذاب النار"

जिसके मायने यह हैं कि ऐ हमारे परवर्दिगार! हमको दुनिया में भी अच्छाई अ़ता फ़रमा और आख़िरत में भी अच्छाई अ़ता फ़रमा। लफ़्ज़ "हम" में सारे मुसलमान दाख़िल हो गए।

यह हर मुसलमान के लिए दुआ है

इसी तरह कहने वाले ने यह नियत कर ली कि यह नमाज़ में "अत्तहिय्यात" तो पढ़ता है, और "अत्तहिय्यात" में ये अल्फ़ाज़ हैं:

"السلام علینا وعلیٰ عباداللّٰہ الصالحین"

इन अल्फ़ाज़ में वह तमाम मुसलमानों के लिए सलामती की दुआ करता है। इसी तरह नमाज़ के आख़िर में सलाम फेरते वक़्त कहता है:

"السلام علیکم ورحمۃ اللّٰہ"

"अस्सलामु अ़लैकुम" के मायने यह हैं कि ऐ अल्लाह! उन पर सलामती नाज़िल फ़रमा। और फ़ुक़हा–ए–किराम ने फ़रमाया है कि जब आदमी नमाज़ के आख़िर मैं दाईं तरफ़ सलाम फेरे तो सलाम फेरते वक़्त यह नियत कर ले कि दाईं तरफ़ जितने फ़रिश्ते, जिन्नात और मुसलमान हैं उन सब के लिए सलामती की दुआ करता हूं। और जब बाईं तरफ़ सलाम फेरे तो यह नियत कर ले कि बाईं तरफ़ जितने फ़रिश्ते, जिन्नात और मुसलमान हैं, उन सब के लिए सलामती की दुआ करता हूं।

इसलिए इस नियत के साथ अगर दूसरे मुसलमान से यह कह दे कि फ़लां तो तुम्हारे हक़ में दुआ करता है, तो सामने वाले के दिल में उसकी क़द्र पैदा होगी कि मैं तो उसको बुरा समझता था लेकिन वह तो मेरे हक़ में दुआ करता है, इसलिए मुझे उस से दुश्मनी नहीं रखनी चाहिए।

बल्कि बाज़ फ़ुक़हा ने इस हदीस की शरह में फ़रमाया कि मुसलमानों के दरमियान सुलह कराने के लिए खुला झूठ भी बोलना पड़े तो खुला झूठ बोलना भी जायज़ है। अगर उसके नतीजे में दो दिल मिल रहे हों। बहर हाल! आपस के झगड़ों की ख़राबी इतनी ज़्यादा है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यहां तक फ़रमा दिया कि ऐसे हालात में हक़ीक़त के ख़िलाफ़ बात कह देना भी जायज़ है जिस से दूसरे के दिल में क़द्र व मुहब्बत और इज़्ज़त पैदा हो जाए। इसलिए जहां कहीं मौक़ा मिले तो आपस में सुलह कराने के अज़ीम दर्जे और बड़े सवाब को हासिल कर लो। कहां तुम सारी रात तहज्जुद पढ़ोगे, कहां तुम सारी उम्र रोज़े रखोगे, कहां तुम सारा माल सदक़ा करोगे, लेकिन अगर तुमने मुसलमानों के दरमियान इत्तिफ़ाक़ और एकता और मुहब्बत पैदा कराने की कोशिश कर ली तो अल्लाह तआ़ला तुम्हें इस से भी आगे का दर्जा अ़ता फ़रमा देंगे।

बाज़ लोग बिल्कुल इसके उलट होते हैं। उनको दो मिले हुए दिल कभी अच्छे नहीं लगते, जहां कहीं देखा कि फ़लां दो शख़्सों में मुहब्बत है तो वे उनके दरमियान ऐसा शोशा छोड़ देते हैं, जिस से दोनों के दिलों में नफ़रत पैदा हो जाती है। याद रखिए! इस से ज़्यादा बद–तरीन गुनाह कोई और नहीं है।

शैतान का सही उत्तराधिकारी कौन?

शैतान ने अपने छोटे शैतानों की एक फ़ौज बना रखी

है, जो पूरी दुनिया में फैली हुई है। और वह लोगों को सही रास्ते से बहकाने का काम करती है। हदीस शरीफ़ में आता है कि यह इब्लीस (शैतान) कभी कभी समुद्र पर अपना दरबार आयोजित करता है और उनसे रिपोर्ट तलब करता है और उसकी तमाम फ़ौज उसको अपनी अपनी कारगुज़ारी सुनाती है। चुनांचे एक शैतान आकर कहता है कि एक शख़्स नमाज़ पढ़ने जा रहा था, मैंने उसके दिल में ऐसी बात डाली कि वह नमाज़ के लिए न जा सका और उसकी नमाज़ क़ज़ा हो गई। मैंने उसको नमाज़ से महरूम कर दिया। इब्लीस उसको शाबाशी देता है कि तुमने अच्छा काम किया। दूसरा शैतान आता है और कहता है कि एक शख़्स रोज़ा रखने का इरादा कर रहा था, मैंने उसके दिल को ऐसा पलटा कि वह रोज़े से बाज़ आ गया। इब्लीस उसको शाबाशी देता है कि तुमने अच्छा काम किया। उसके बाद तीसरा शैतान आता है और कहता है कि फ़लां शख़्स सदक़ा ख़ैरात करना चाहता था, मैंने उसके हालात ऐसे पैदा कर दिए कि वह सदक़ा करने से रुक गया। इब्लीस उसको भी शाबाशी देता है कि तुमने अच्छा काम किया। आख़िर में एक शैतान आकर कहता है कि दो मियां बीवी बड़ी मुहब्बत से ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे, मैंने जाकर उनके दरमियान ऐसा मसला खड़ा कर दिया कि दोनों के दरमियान झगड़ा हो गया और दोनों एक दूसरे की सूरत देखने के रवादार न रहे, यहां तक कि दोनों के दरमियान जुदाई हो गई। इब्लीस यह सुनकर अपने तख़्त से खड़ा हो

जाता है और उसको गले लगा लेता है और कहता है कि तू मेरा सही उत्तराधिकारी है, तूने सही काम किया और मेरे मतलब के मुताबिक़ काम किया।

नफ़रतें डालने वाला बड़ा मुज्रिम है

बहर हाल! शैतान का सब से बड़ा हर्बा और सब से कामयाब मन्सूबा यह होता है कि लोगों के दिलों में नफ़रतें पैदा करे। इसलिए जिन लोगों की यह आ़दत होती है कि अच्छे ख़ासे रहते बसते लोगों के दरमियान और मुहब्बत करने वाले दोस्तों के दरमियान नफ़रत पैदा कर देते हैं, और इधर की बात उधर लगा देते हैं, लगाई बुझाई शुरू कर देते हैं। इस हदीस की रू से वे बहुत ख़तरनाक जुर्म का इर्तिकाब कर रहे हैं, नमाज़ रोज़े से रोक देना भी शैतानी अ़मल है लेकिन यह ऐसा शैतानी अ़मल है कि शैतान इस से बहुत ख़ुश होता है। अल्लाह तआ़ला हर मुसलमान को इस से महफ़ूज़ रखे, आमीन। इसलिए इस से बचने की फ़िक्र करनी चाहिए।

झगड़ों से कैसे बचें?

अब सवाल यह है कि इन झगड़ों से कैसे बचें और आपस में मुहब्बतें कैसे पैदा हों। और ये आपस के इख़्तिलाफ़ात कैसे ख़त्म हों? इसके लिए हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उम्मत को बड़ी बारीक बीनी से हिदायतें अ़ता फ़रमाई हैं। उन हिदायतों में से एक एक हिदायत आपस में मुहब्बत को पैदा करने वाली है और

आपस के झगड़ों को ख़त्म करने वाली है। लेकिन उन हिदायतों के बयान से पहले एक उसूली बात समझ लें।

झगड़े ख़त्म करने की एक शर्त

उसूली बात यह है कि आपस के झगड़े ख़त्म करने और आपस में मुहब्बत पैदा करने और आपस में इत्तिफ़ाक़ और एकता पैदा करने की एक ख़ास शर्त है। जब तक वह शर्त नहीं पाई जायेगी, उस वक़्त तक झगड़े दूर नहीं होंगे। आज हर तरफ़ से यह आवाज़ बुलन्द हो रही है कि मुसलमानों में इत्तिहाद और एकता होना चाहिए, झगड़े ख़त्म होने चाहिएं, और यहां तक कि जो लोग झगड़ों का बीज बोने वाले हैं वे भी इत्तिफ़ाक़ और इत्तिहाद का नारा लगाते हैं। लेकिन फिर भी इत्तिहाद और इत्तिफ़ाक़ क़ायम नहीं होता, क्योंकि इत्तिहाद क़ायम नहीं होता? इसके बारे में एक बुज़ुर्ग की बात सुन लीजिए, जिसने इस बीमारी की दहकती हुई रग पर हाथ रख कर इस बीमारी की तश्ख़ीस (यानी जांच) की है। और मर्ज़ की सही तश्ख़ीस हमेशा अल्लाह वाले ही करते हैं, क्योंकि हर बीमारी की सही तश्ख़ीस और उसका सही इलाज अल्लाह तआला अपने नेक बन्दों के दिलों पर ही नाज़िल फ़रमाते हैं।

हाजी इमदादुल्लाह साहिब रहमतुल्लाहि अलैहि

जमाअते देवबन्द के सरदार और शैख़े वक़्त हज़रत हाजी इमदादुल्लाह साहिब मुहाजिर मक्की रहमतुल्लाहि अलैहि जो हमारे शैख़ के शैख़ के शैख़ हैं। अगर उनके

हालात पूछो तो वह किसी मदरसे के फ़ारिग़ भी नहीं, बाक़ायदा ज़ाबते में सनद याफ़्ता आलिम भी नहीं, सिर्फ़ काफ़िया और कुदूरी तक किताबें पढ़े हुए थे, लेकिन जब अल्लाह तआला अपने किसी बन्दे पर मारिफ़त के दरवाज़े खोलते हैं तो हज़ार इल्म व तहक़ीक़ के माहिर उसके आगे कुरबान हो जाते हैं। हज़रत मौलाना क़ासिम साहिब नानौतवी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि जैसे इल्म के पहाड़ और हज़रत मौलाना रशीद अहमद साहिब गंगोही रह्मतुल्लाहि अ़लैहि जैसे इल्म के पहाड़ भी अपनी तरबियत के लिए, अपने बातिन की सफ़ाई के लिए और अपने अख़्लाक़ को दुरुस्त करने के लिए उनके पास जाकर शार्गिदी इख़्तियार कर रहे हैं।

इत्तिहाद के लिए दो शर्तें, तवाज़ो और ईसार

उन्होंने यह गिरह खोली कि जब सब लोग इत्तिहाद और इत्तिफ़ाक़ की कोशिश कर रहे हैं, इसके बावजूद इत्तिहाद क्यों क़ायम नहीं हो रहा है? इसके जवाब में जो हकीमाना बात हज़रत हाजी साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ने इर्शाद फ़रमाई है, मैं दावे से कहता हूं कि अगर उस बात को हम लोग पल्ले बांध लें तो हमारे समाज के सारे झगड़े ख़त्म हो जाएं, फ़रमाया कि:

इत्तिहाद व इत्तिफ़ाक़ का बुनियादी रास्ता यह है कि अपने अन्दर दो चीज़ें पैदा करो, अगर ये दो चीज़ें पैदा हो गईं तो इत्तिहाद क़ायम हो जायेगा और अगर इनमें से एक चीज़ भी न पाई गई तो कभी इत्तिहाद क़ायम नहीं होगा। वे

दो चीज़ें ये हैं: एक तवाज़ो, दूसरे ईसार।

"तवाज़ो" का मतलब यह है कि आदमी अपने आपको यों समझे कि मेरी कोई हक़ीक़त नहीं, मैं तो अल्लाह का बन्दा हूं और बन्दा होने की हैसियत से अल्लाह तआला के अहकाम का पाबन्द हूं। और अपनी ज़ात में मेरे अन्दर कोई फ़ज़ीलत नहीं, मेरा कोई हक़ नहीं, इसलिए अगर कोई शख़्स मेरी हक़ तल्फ़ी करता है तो वह कौन सा बुरा काम करता है। मैं तो हक़ तल्फ़ी का ही हक़दार हूं।

इत्तिहाद में रुकावट "तकब्बुर"

हज़रत हाजी साहिब रह्मतुल्लाहि अलैहि ने फ़रमाया कि इत्तिहाद इसलिए क़ायम नहीं होता कि हर आदमी के दिल में तकब्बुर है। वह यह समझता है कि मैं बड़ा हूं, मेरे फ़लां हुक़ूक़ हैं, फ़लां ने मेरी शान के ख़िलाफ़ बात की है, फ़लां ने मेरे दर्जे के ख़िलाफ़ काम किया है, मेरी हक़ तल्फ़ी की है। मेरा हक़ यह था कि वह मेरा सम्मान करता, लेकिन उसने मेरा सम्मान नहीं किया, मैं उसके घर गया, उसने मेरी ख़ातिर तवाज़ो नहीं की, इस तकब्बुर का नतीजा यह हुआ कि झगड़ा खड़ा हो गया।

तकब्बुर की वजह से अपने आपको बड़ा समझा और बड़ा समझने के नतीजे में अपने लिए कुछ हुक़ूक़ घड़ लिए, और यह सोचा कि मेरे रुतबे का तक़ाज़ा तो यह था कि फ़लां शख़्स मेरे साथ ऐसा सुलूक करता, जब दूसरे ने ऐसा सुलूक नहीं किया तो अब दिल में शिकायत हो गई, और उसके नतीजे में गिरह बैठ गई और उसके बाद नफ़रत

पैदा हो गई, और उसके बाद उसके साथ मामलात ख़राब करना शुरू कर दिए। इसलिए झगड़े की बुनियाद "तकब्बुर" यानी घमण्ड है।

राहत वाली ज़िन्दगी के लिए बेहतरीन नुस्ख़ा

हकीमुल उम्मत हज़रत मौलाना अशरफ़ अ़ली साहिब थानवी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि मैं तुम्हें मज़ेदार और राहत वाली ज़िन्दगी का एक नुस्ख़ा बताता हूं। अगर तुम इस नुस्ख़े पर अ़मल कर लोगे तो फिर इन्शा अल्लाह किसी की तरफ़ से दिल में कोई शिकवा शिकायत और गिला पैदा नहीं होगा। वह यह कि दिल में यह सोच लो कि यह दुनिया ख़राब चीज़ है और इसकी असल बनावट ही तक्लीफ़ पहुंचाने के लिए है इसलिए अगर मुझे किसी इन्सान या जानवर से तक्लीफ़ पहुंचती है तो यह तक्लीफ़ पहुंचना दुनिया की फ़ितरत की पैदाइश के ऐन मुताबिक़ है, और अगर दुनिया में किसी की तरफ़ से तुम्हें अच्छाई पहुंचे तो उस पर तुम्हें ताज्जुब करना चाहिए और उस पर अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करना चाहिए।

अच्छी उम्मीदें न बांधो

इसलिए दुनिया में किसी भी अपने मिलने जुलने वाले से, चाहे वह दोस्त हो, या रिश्तेदार हो, या क़रीबी अ़ज़ीज़ हो, किसी से अच्छाई की उम्मीद क़ायम न करो कि यह मुझे कुछ दे देगा, या यह मुझे कुछ नफ़ा पहुंचा देगा, या यह मेरी इज़्ज़त करेगा, या यह मेरी मदद करेगा। किसी भी

मख़्लूक़ से किसी भी क़िस्म की उम्मीद क़ायम न करो, और जब किसी मख़्लूक़ से नफ़े की कोई उम्मीद नहीं होगी, फिर अगर किसी मख़्लूक़ ने कोई फ़ायदा पहुंचा दिया और तुम्हारे साथ अच्छा सुलूक कर लिया तो उस से तुम्हें ख़ुशी होगी, उस पर अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करो कि या अल्लाह! आपने अपने फ़ज़्ल से उसके दिल में बात डाल दी जिसके नतीजे में उसने मेरे साथ अच्छा सुलूक किया।

दुश्मन से शिकायत नहीं होती

और अगर किसी मख़्लूक़ ने तुम्हारे साथ बद सुलूकी की, तो उस से तक्लीफ़ नहीं होगी, क्योंकि पहले ही से उस से कोई अच्छी उम्मीद नहीं थी। देखिए! अगर कोई दुश्मन तुम्हें कोई तक्लीफ़ पहुंचाए तो उस से तुम्हें कोई शिकायत होती है? नहीं होती, क्योंकि वह तो दुश्मन ही है, उसका काम ही तक्लीफ़ पहुंचाना है। इसलिए उसके तक्लीफ़ पहुंचाने से ज़्यादा सदमा और रन्जिश नहीं होती, शिकवा और गिला नहीं होता। शिकवा उस वक़्त होता है कि जब किसी से अच्छाई की उम्मीद थी, लेकिन उसने बुराई कर ली। इसलिए हज़रत थानवी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि सारी मख़्लूक़ से उम्मीद मिटा दो।

सिर्फ़ एक ज़ात से उम्मीद रखो

उम्मीद तो सिर्फ़ एक ज़ात से क़ायम करनी चाहिए, उसी से मांगो, उसी से अपेक्षा रखो, उसी से उम्मीद रखो, बाक़ी सारी दुनिया से उम्मीदें छोड़ दो। सिर्फ़ अल्लाह

तआ़ला से उम्मीदें बांधो। चुनांचे हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम यह दुआ़ मांगा करते थेः

"اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ فِیْ قَلْبِیْ رَجَاءَكَ، وَاقْطَعْ رَجَائِیْ عَنْ مَّنْ سِوَاكَ"

ऐ अल्लाह! मेरे दिल में अपनी उम्मीद डाल दीजिए और मेरी उम्मीदें अपने सिवा हर एक मख़्लूक़ से ख़त्म कर दीजिए।

यह दुआ़ मांगा करो।

इत्तिहाद की पहली बुनियाद "तवाज़ो"

और जब इन्सान के अन्दर तवाज़ो (आ़जज़ी और इन्किसारी) होगी तो वह अपना हक़ दूसरों पर नहीं समझेगा कि मेरा कोई हक़ दूसरे के ज़िम्मे है, बल्कि वह तो यह समझेगा कि मैं तो अल्लाह का बन्दा हूं, मेरा कोई मक़ाम और कोई दर्जा नहीं, अल्लाह तआ़ला जो मामला मेरे साथ फ़रमायेंगे मैं उस पर राज़ी हूं। जब दिल में यह तवाज़ो पैदा हो गई तो दूसरे से उम्मीद भी क़ायम नहीं होगी। जब उम्मीद नहीं होगी तो फिर दूसरे से शिकवा शिकायत भी नहीं होगी। और जब शिकवा नहीं होगा तो झगड़ा भी पैदा नहीं होगा। इसलिए इत्तिफ़ाक़ और इत्तिहाद की पहली बुनियाद "तवाज़ो" है।

इत्तिहाद की दूसरी बुनियाद "ईसार"

इत्तिफ़ाक़ और इत्तिहाद की दूसरी बुनियाद "ईसार" है। यानी ख़ुदा की मख़्लूक़ के साथ ईसार का रवैया इख़्तियार करो। 'ईसार' के मायने यह हैं कि दिल में यह जज़्बा हो

कि मैं अपनी राहत की कुरबानी दे दूं और अपने मुसलमान भाई को राहत पहुंचा दूं। मैं ख़ुद तक्लीफ़ उठा लूं लेकिन अपने मुसलमान भाई को तक्लीफ़ से बचा लूं। ख़ुद नुक़सान उठा लूं लेकिन अपने मुसलमान भाई को नफ़ा पहुंचा दूं। यह ईसार का जज़्बा अपने अन्दर पैदा कर लो।

इस नफ़े व ज़रर की दुनिया में
यह हमने लिया है दर्से जुनूं
अपना तो ज़ियां तस्लीम मगर
औरों का ज़ियां मन्ज़ूर नहीं

अपना नुक़सान कर लेना मन्ज़ूर है, लेकिन औरों का नुक़सान मन्ज़ूर नहीं। यही वह सबक़ है जो नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अ़ता फ़रमाया।

सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम और ईसार

और कुरआने करीम ने अन्सारी सहाबा–ए–किराम के ईसार को बयान करते हुए फ़रमायाः

"يُؤْثِرُوْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ وَلَوْكَانَ بِهِمْ خَصَاصَة"

यानी ये अन्सारी सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ऐसे हैं कि चाहे सख़्त तंगदस्ती और नादारी की हालत हो, लेकिन उस हालत में भी अपने ऊपर दूसरों का ईसार करते हैं। कैसे करते हैं? एक बार हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में कुछ मुसाफ़िर आ गए जो तंगदस्त थे। ऐसे मौक़े पर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सहाबा–ए–किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम से फ़रमाते कि कुछ मेहमान बाहर से आ गए हैं जो तंगदस्त हैं, इसलिए

जिनको गुन्जाइश हो वे अपने साथ मेहमान को ले जाएं, और उनके खाने का बन्दो बस्त कर दें।

एक सहाबी का ईसार

चुनांचे उस मौक़े पर यह इर्शाद सुनकर एक अन्सारी सहाबी रज़ियल्लाहु अ़न्हु एक मेहमान को अपने घर ले गए। घर जाकर बीवी से पूछा कि खाना है? मेहमान आए हैं। बीवी ने जवाब दिया कि इतना खाना नहीं है कि मेहमान को भी खिला सकें, या तो मेहमान खायेंगे या हम खायेंगे। सब नहीं खा सकते। उन सहाबी ने फ़रमाया कि खाना मेहमान के सामने रख दो और चिराग़ बुझा दो। चुनांचे बीवी ने खाना मेहमान के सामने रख दिया और चिराग़ बुझा दिया। उन सहाबी ने मेहमान से कहा कि खाना खाइए, मेहमान ने खाना शुरू किया और यह सहाबी उनके साथ बैठ गए, लेकिन खाना नहीं खाया बल्कि अपना खाली हाथ खाने तक ले जाते और मुंह तक लाते, ताकि मेहमान यह समझे कि खाना खा रहे हैं, हक़ीक़त में वह ख़ाली हाथ चला रहे थे। चुनांचे मियां बीवी और बच्चों ने रात भूख में गुज़ारी और मेहमान को खाना खिला दिया। अल्लाह तआ़ला को उनका यह अन्दाज़ इतना पसन्द आया कि क़ुरआने करीम में उसका बयान फ़रमा दिया कि:

"يُؤْثِرُوْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ وَلَوْكَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ"

ये वे लोग हैं जो अपनी ज़ात पर दूसरों को तरजीह देते हैं, चाहे ख़ुद उन पर तंगदस्ती की हालत हो। ख़ुद भूखा रहना गवारा कर लिया, लेकिन दूसरे को राहत पहुंचा दी और उसको खाना खिला दिया। यह है ईसार।

ईसार का मतलब

इसलिए ईसार यह है कि अपने ऊपर थोड़ी सी तक्लीफ़ बर्दाश्त कर ले, लेकिन अपने मुसलमान भाई का दिल ख़ुश कर दे। याद रखिए। जिसको अल्लाह तआ़ला यह सिफ़त अ़ता फ़रमाते हैं, उसको ईमान की ऐसी मिठास अ़ता फ़रमाते हैं कि दुनिया की सारी हलावतें और मिठास उसके सामने कुछ नहीं। जब इन्सान अपनी ज़ात पर तंगी बर्दाश्त करके दूसरे मुसलमान भाई को ख़ुश करता है और उसके चेहरे पर मुस्कुराहट लाता है तो उसकी जो लज़्ज़त है उसके आगे दुनिया की सारी लज़्ज़तें कुछ नहीं हैं। यह दुनिया मालूम नहीं कितने दिन की है, पता नहीं कब बुलावा आ जाए, बैठे बैठे आदमी रुख़्सत हो जाता है, इसलिए ईसार पैदा करो, जब ईसार पैदा हो जाता है तो अल्लाह तआ़ला उसकी बर्कत से दिलों में मुहब्बतें पैदा फ़रमा देते हैं, और ईसार करने वाले को अपनी नेमतों से नवाज़ते हैं।

एक शख़्स की मग़फ़िरत का वाक़िआ़

हदीस शरीफ़ में आता है कि पिछली उम्मतों में एक शख़्स था, जब उसका इन्तिक़ाल हो गया और अल्लाह तआ़ला के दरबार में पेश हुआ तो उसके आमाल नामे में कोई बड़ी इबादत नहीं थी, अल्लाह तआ़ला ने आमाल नामा लिखने वाले फ़रिश्तों से पूछा कि इसके आमाल नामे में कोई नेकी है या नहीं? फ़रिश्तों ने जवाब दिया कि इसके आमाल नामे में कोई बड़ी नेकी तो नहीं है, लेकिन एक नेकी इसकी यह है कि जब किसी से कोई माल ख़रीदता

तो माल बेचने वाले से झगड़ता नहीं था, बस जो पैसे उसने बता दिए, उस से थोड़ा कम कराया और माल ख़रीद लिया।

"سهلًا اذا باع، سهلًا اذا اشترى"

और जब माल बेचने जाता तो उसमें भी नरमी करता उस पर ज़िद नहीं करता था कि बस मैं इतने पैसे लूंगा, बल्कि जब यह देखा कि ख़रीदने वाला ग़रीब है तो पैसे कम कर दिए। इसी तरह अगर इसका क़र्ज़ा दूसरे पर होता और वह देखता कि यह अपना क़र्ज़ा अदा नहीं कर पा रहा है तो उसको माफ़ कर देता था।

बस इसकी सिर्फ़ यह नेकी आमाल नामे में है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि जब यह मेरे बन्दों को क़र्ज़ से माफ़ कर देता था तो मैं इस बात का ज़्यादा मुस्तहिक़ हूं कि इसको माफ़ कर दूं, इसलिए मैंने इसको माफ़ कर दिया। इस बुनियाद पर अल्लाह तआला ने उसकी मग़फ़िरत फ़रमा दी। यह क्या चीज़ थी? यह "ईसार" था।

ख़ुद ग़र्ज़ी ख़त्म कर दो

बहर हाल! हज़रत हाजी इमदादुल्लाह साहिब मुहाजिर मक्की रह़्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि अपने अन्दर से तकब्बुर को निकालो और ईसार पैदा कर लो, तमाम झगड़े ख़त्म हो जायेंगे। और "ख़ुद ग़र्ज़ी" यह ईसार की ज़िद है, ख़ुद ग़र्ज़ी का मतलब यह है कि इन्सान हर वक़्त अपनी कायनात में उलझा हुआ है कि किस तरह मुझे पैसे ज़्यादा मिल जाएं, किस तरह मुझे इज़्ज़त ज़्यादा मिल जाए, किस

तरह मुझे शोहरत मिल जाए, किस तरह लोगों की निगाह में मेरा रुतबा बुलन्द हो जाए। दिन रात इसी फ़िक्र में पड़ा हुआ है। यह है "ख़ुद ग़र्ज़ी" ईसार इसकी ज़िद है।

"तवाज़ो" की ज़िद है "तकब्बुर" इसलिए अगर इन्सान तकब्बुर और ख़ुद ग़र्ज़ी छोड़ दे और तवाज़ो और ईसार इख़्तियार कर ले तो फिर इत्तिहाद और मुहब्बत क़ायम हो जायेगी, इन्शा अल्लाह। इसलिए हर मुसलमान इसको पल्ले बांध ले। बहर हाल! एक अ़मल तो यह हो गया जो हज़रत हाजी साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ने बयान फ़रमाया।

पसन्दीदगी का मेयार एक हो

दूसरी बात जो हदीस शरीफ़ में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने बयान फ़रमाई जो हकीक़त में तमाम उम्दा और ऊंचे अख़्लाक़ की बुनियाद है, अगर यह चीज़ हमारे अन्दर पैदा हो जाए तो सारे झगड़े हमारे अन्दर से ख़त्म हो जाएं, वह बात यह इर्शाद फ़रमाई:

أحب لاخيك ما تحب لنفسك   واكره لأخيك ما تكره لنفسك

यानी अपने भाई के लिए वही बात पसन्द करो जो अपने लिए पसन्द करते हो। और अपने भाई के लिए वही बात ना पसन्द करो जो अपने लिए ना पसन्द करते हो। इसलिए जब भी किसी के साथ कोई मामला पेश आए तो ख़ुद को उसकी जगह पर रख कर सोच लो कि अगर मैं उसकी जगह पर होता और यह मेरी जगह पर होता और मेरे साथ यह मामला करता तो मैं किस बात को पसन्द करता और किस बात को ना पसन्द करता। इसलिए जिस

बात को मैं पसन्द करता मुझे उसके साथ भी वही मामला करना चाहिए। और जो चीज़ मैं ना पसन्द करता मुझे भी उसके साथ वह चीज़ नहीं करनी चाहिए। यह बेहतरीन पैमाना है कि इसके ज़रिए आप दूसरों के साथ किए गए हर मामले को जांच सकते हैं।

दोहरे पैमाने ख़त्म कर दो

हमारे समाज की बहुत बड़ी बीमारी यह है कि हमने दोहरे पैमाने बना रखे हैं। अपने लिए मेयार कुछ और है और दूसरे के लिए मेयार कुछ और है। अपने लिए जो बात पसन्द करते हैं वह दूसरों के लिए पसन्द नहीं करते। आप ज़रा ग़ौर करके देखें कि अगर हर शख़्स हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इस नसीहत पर अमल करना शुरू कर दे कि अपने भाई के लिए भी वही पसन्द करे जो अपने लिए पसन्द करता है तो फिर कोई झगड़ा बाक़ी नहीं रहेगा। इसलिए कि उस सूरत में हर शख़्स ऐसे अमल से परहेज़ करेगा जो दूसरों को तक्लीफ़ देने वाला होगा।

बहर हाल! अपने दरमियान इत्तिफ़ाक़ और इत्तिहाद यानी एकता पैदा करने की ये चन्द उसूली बातें हैं, अल्लाह तआला अपने फ़ज़्ल व करम से इनकी समझ भी अता फ़रमाए और इन पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, आमीन।

وآخر دعوانا ان الحمد للہ رب العالمین